ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 168-170
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

# जे0 कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन की मूल्य मीमांसा

**अवनीश पटेल**
शोध अध्येता– शिक्षा संकाय,राजा श्री कृष्ण दत्त पी0जी0 कालेज जौनपुर, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्व विद्यालय जौनपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 20.11.2018, Revised- 24.11.2018, Accepted - 27.11.2018 E-mail: avaneesh0507@gmail.com

***सारांश :*** ***जे. कृष्णमूर्ति जी एक महान आध्यात्मवादी, दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री थे। उन्हें महान समाज के पथ प्रदर्शक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने विचार समाज, धर्म, संस्कृति, दर्शन आदि पर दिये हैं। समाज, धर्म, संस्कृति, दर्शन पर दिये गये विचार ही मूल्य के आधार होते हैं। इसमें यह कहा जाता है कि समाज या व्यक्ति के लिए क्या करना उचित है क्या करना अनुचित है। एक तरह से देखा जाय तो मूल्य ही समाज के लिए दर्पण होते हैं, जो मानवीय सद्गुणों एवं मानव में अच्छे कर्मों के विकास में सहायक होते हैं। कृष्णमूर्ति जी के मूल्य स्नेह, प्रेम, ह्रदय एवं स्वतंत्रता की भावना से प्रेरित है उनका मानना है कि सरस ह्रदय में ही मूल्य का विकास हो सकता है, जिसमें स्नेह प्रेम का विशेष महत्व होता है। सरस ह्रदय, स्नेह, प्रेम से विकसित मूल्य ही मानव को आनन्द की अनुभूति कराते हैं।***

***कुंजीभूत शब्द– आध्यात्मवादी, दार्शनिक, पथ प्रदर्शक, संस्कृति दर्शन, विश्वबंधुत्व, मूल्य स्नेह, स्वतंत्रता।***

वर्तमान समय में मूल्य भारत ही नहीं विश्व स्तर पर चिंता के विषय बने हुए हैं, समाज में पाये जाने वाले सभी मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है और लोगों के अन्दर धोखाधड़ी एवं स्वार्थ की भावना बढ़ती जा रही है। मानव के कुछ क्रिया–कलाप मानव को पशु के समान बना रहे हैं। भारत प्राचीन काल से सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव आदि पर विश्वास करता रहा है लेकिन वर्तमान समय में मानव इससे दूर होता जा रहा है और अपने मूल्यों को भूलता जा रहा है।

जे. कृष्णमूर्ति जी ने कहा है कि "चूंकि हमारे ह्रदय मुरझा चुके हैं और हम भूल गए हैं कि सौम्य–स्नेहिल कैसे हुआ जाता है, सितारों को, जल में पड़ी परछाइयों को कैसे देखा जाता है, हमें चित्रों, जवाहरातों, पुस्तकों और दूसरे तमाम मनोरंजनों से प्राप्त उत्तेजनाओं की ज़रूरत पड़ती है। हम लगातार नए–नए उद्दीपनों की, नए–नए रोमांचों की खोज में लगे रहते हैं, हमें नई से नई उत्तेजनाओं की लालसा होती है। यह लालसा और उससे प्राप्त होने वाली तुष्टि ही कला है जो हमारे मन और ह्रदय को थका हुआ और बोझिल बना देती है।"

मूल्य की विषेशताएँ:–

जे. कृष्णमूर्ति जी ने मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए इसकी निम्नलिखित विशेषताएं बतायी है–

1. मूल्य सरस एवं स्वच्छ ह्रदय से प्राप्त होते हैं।
2. मूल्य में प्रेम एवं स्नेह की भावना होती है।
3. मूल्य व्यक्ति को सत्यनिष्ठता का पालन करने का मार्ग दिखाता है।
4. समाज में तादात्म्य स्थापित करने के लिए मूल्य एक आवश्यक तत्व माना गया है।
5. इससे विश्वबंधुत्व एवं शान्ति की भावना का विकास होता है।
6. मूल्यों से सृजनात्मकता तथा अन्वेषण के गुणों का विकास होता है।
7. शैक्षिक मूल्य ही सभी मूल्यों के विकास का आधार है।
8. मूल्य ही व्यक्ति को नैतिक बनाते हैं।
9. मूल्यों के विकास से व्यक्ति में धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता का गुणों का विकास होता है।
10. प्रेम, अहिंसा, करुणा का भाव जागृत करने में मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
11. संवेदनशीलता के गुणों का विकास मूल्यों से होता है।
12. मूल्य हमें ब्रह्मचर्य एवं संयम का पाठ सिखाते हैं।

**मूल्य के प्रकार–**

जे. कृष्णमूर्ति जी द्वारा विचार किये गये मूल्यों का वर्गीकरण निम्नलिखित है–

**नैतिक मूल्य–** नैतिक मूल्यों से अभिप्राय व्यक्ति के ईमानदारी, त्याग, आचरण, दया, करुणा आदि से होता है। नैतिक मूल्य व्यक्ति एवं समाज दोनों को प्रभावित करता है। जे. कृष्णमूर्ति जी ने कहा है कि "हमारे शरीर की रचना और हमारा रंग भिन्न हो सकता है, हमारे चेहरे अलग–अलग तरह के हो सकते हैं, लेकिन अन्दर से हम बहुत कुछ एक समान हैं सबमें वही कुछ है–अभिमान, महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या, हिंसा, काम भावना, सत्ता–लोलुपता आदि–आदि। अपने ऊपर लगे

हुए लेवलों को हटाते ही हम बिल्कुल नग्न हैं, पर हम अपनी नग्नता का सामना नहीं करना चाहते हैं और इसलिए हम लेबिलों पर जोर देते हैं। इससे पता चलता है कि हम कितने अपरिपक्व, वास्तव में कितने बचकाने हैं।'' जे0 कृष्णमूर्ति जी मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ आंतरिक तत्व होते हैं, जैसे स्नेह, सहानुभूति, दया आदि, जो व्यक्ति के अन्दर मूल्यों का विकास करते हैं।

**शैक्षिक मूल्य–** शैक्षिक मूल्य ज्ञान प्राप्त करने से होता है। शैक्षिक मूल्यों के विकास में विद्यालय, परिवार, समाज महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालय का योगदान शैक्षिक मूल्य के विकास में अतुलनीय होता है। शैक्षिक मूल्य मानव सम्बंधित सभी मूल्यों की आधारशिला होती है। शैक्षिक मूल्यों के विकास के प्रमुख केन्द्र विद्यालय होते हैं। इसलिए विद्यालय को स्वस्थ वातावरण एवं निष्पक्ष व्यवहार से युक्त होना चाहिए।

जे. कृष्णमूर्ति जी आज तकनीक पर आधारित शिक्षा व्यवस्था को निराधार मानते हैं। उनका मानना है कि यह बालकों के अन्दर मूल्य की भावना विकसित नहीं करते हैं बल्कि एक रोजगार प्राप्त करने के साधन के रूप में विकसित करते हैं। यह बालकों के अन्दर सद्भाव, प्रेम, करूणा आदि को खत्म करता जाता है। उन्होंने कहा है कि आज की शिक्षा पूर्णतया असफल है क्योंकि उसने तकनीक पर आवश्यकता से अधिक बल दिया है। तकनीकि पर आवश्यकता से अधिक बल देकर हम मनुष्य को बर्बाद कर देते हैं। जीवन को समझे बिना, विचार और तृष्णा की प्रक्रिया का व्यापक साक्षात्कार किये बिना, क्षमता और कार्य–कुशलता का विकास करना हमें अधिकाधिक निष्ठुर बना देगा, जिससे युद्ध उपजेंगे और हमारी भौतिक सुरक्षा भी खतरे में पड़ जायेगी।''

उनका मानना है कि तकनीकी शिक्षा मानवीय आर्थिक समस्या का समाधान कुछ हद तक कर सकती है लेकिन मानवीय, सामाजिक समस्या, जीवन के रहस्यों की समस्या के समाधान में असफल ही नजर आती है। वह व्यक्ति के अन्दर मूल्य, दया, स्नेह आदि का विकास करने में असफल होती है। शैक्षिक मूल्यों के अन्तर्गत व्यक्ति को आत्मज्ञान, सत्यनिष्ठा आदि की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।

**सामाजिक मूल्य–** सामाजिक मूल्य मानवीय जीवन के क्रिया–कलाप का अभिन्न अंग है। इसमें प्रेम, सहयोग, भाईचारा, सेवाभाव आदि का समावेश होता है। इसमें समाज की सेवा करना मानव का धर्म माना जाता है। यह मूल्य स्वार्थ से परे एवं समाज की भलाई से सम्बंधित होता है।

जे. कृष्णमूर्ति जी भी सामाजिक मूल्यों पर बल देते हैं वह सहयोग, परस्पर दायित्व एवं संवेदनशीलता एवं प्रेम मूल्यों को महत्व देते हैं वे स्वार्थ, प्रतिष्ठा एवं स्वास्तित्व को सामाजिक भावना के लिए घातक मानते हैं। उनका मानना है कि समाज में जब तक स्वार्थ, क्लेश, प्रतिकार आदि की भावना मानव के अन्दर रहेगी, तब तक सामाजिक मूल्य का विकास होना सम्भव नहीं है।

उनका मानना है कि सामाजिक मूल्यों के अभाव में सामाजिक दायित्व का निर्वाह असम्भव है इसके अभाव में सामाजिक समस्याओं का समाधान भी असम्भव होता है। सामाजिक मूल्य के विकास का सबसे प्रभावी साधन शिक्षा है सामाजिक मूल्य अपने परम लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकती है जबकि समाज के व्यक्ति शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करे तथा प्रेम के साथ सहभागिता पूर्ण जीवन यापन करे।

**धार्मिक मूल्य–** भारत प्राचीन काल से ही धर्म एवं धार्मिक मूल्यों का प्रतिरूप माना जाता है। धर्म एक बृहद शब्द है जिसमें विश्वास, क्षमा, ज्ञान एवं पवित्रता का समावेश होता है। कृष्णमूर्ति जी किसी ईश्वर की सत्ता पर विश्वास नहीं करते थे और न ही मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि की महिमा करते थे वे सत्य को ही ईश्वर मानते थे। उनका मानना था कि धार्मिक मन पूर्णतया अकेला एवं स्वतंत्र होता है। उन्होंने कहा है कि ''एक सच्चा धार्मिक मन, जो किसी सम्प्रदाय का, किसी वर्ग का, किसी धर्म का, किसी संगठित चर्च का नहीं होता। धार्मिक मन न तो हिन्दू, न ईसाई, न बौद्ध न तो मुस्लिम ही है। धार्मिक मन किसी भी ऐसे वर्ग का नहीं होता जो अपने को धार्मिक कहता है, धार्मिक मन वही नहीं है जो चर्च, मंदिर अथवा मस्जिद में जाता है और न वही मन धार्मिक होता है जिसके कुछ विश्वास होते हैं, कुछ रूढ़ि सिद्धांत होते हैं। धार्मिक मन पूर्णतया अकेला होता है। वह ऐसा मन है जिसने चर्च के, रूढ़ी सिद्धांतों के, विश्वासों के, परम्पराओं के मिथ्यात्व को समझ लिया है।''

धार्मिक मन अनन्त, अर्जनशील एवं अन्वेषण युक्त होता है। उन्होंने कहा है कि ''धार्मिक मन सृजनशील होता है उसे न केवल अतीत का अंत करना होता है वरन् वर्तमान में भी विस्फोट करना होता है। धार्मिक मन गीता की, उपनिषद की, बाइबिल की, व्याख्या करने वाला मन नहीं है, वह अन्वेषण की क्षमता रखता है और एक विस्फोट यथार्थ का सर्जन भी कर सकता है। यहाँ न तो कोई व्याख्या है और न कोई रूढ़ि–सिद्धान्त ही है।''

**सौन्दर्यात्मक मूल्य–** सौन्दर्यात्मक मूल्य मानवीय सौन्दर्य के गुणों से युक्त बातों का बोध कराता है प्रत्येक व्यक्ति में सौन्दर्यात्मक मूल्य अलग–अलग होता है। सौन्दर्य दो प्रकार का माना गया है आन्तरिक सौन्दर्य एवं वाह्य सौन्दर्य। कृष्णमूर्ति जी मूलतः आन्तरिक सौन्दर्य की बात करते हैं वे वाह्य सौन्दर्य पर कम विश्वास करते हैं। सौन्दर्य बोध को मानव जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। उन्होंने

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-II, Issues-10 YEAR- Dec -2018

कहा है कि "निःसंदेह सौन्दर्य में वाह्य सौन्दर्य का भी समावेश है लेकिन आन्तरिक सौन्दर्य के अभाव में केवल इन्द्रिय जनित सौन्दर्यबोध हमें पतन और विघटन की ओर ले जायेगा। आप में यह आन्तरिक सौन्दर्य तभी पैदा होगा, जब आप व्यक्तियों और वसुधा की समस्त वस्तुओं से प्रेम करेंगे और इस प्रेम के साथ ही आपमें अतिशय विचारशीलता, सहजता और धैर्य का आगमन होगा। आप भले ही संगीत, काव्य, कला के पूरे ज्ञाता हों, भले ही आप चित्रकार अथवा लेखक हों, लेकिन जब तक आप में यह सृजनात्मक सौन्दर्य नहीं है, तब तक आपकी योग्यता का बहुत ही कम अर्थ होगा।"

कृष्णमूर्ति जी का मानना है कि वाह्य सौन्दर्य केवल दिखावटी एवं अस्थायी होता है। जबकि आन्तरिक सौन्दर्य सृजनात्मक एवं स्थायी होता है। सृजनशीलता से युक्त मन ही आन्तरिक सौन्दर्य से युक्त मन माना जाता है। यह परित्याग एवं आत्म संयम पर बल देता है। आंतरिक सौन्दर्य प्रेम और सरलता के मूल मंत्र पर आधारित है, जो प्रेम करता है वह परित्याग करता है और वही सृजनात्मक सौन्दर्य की अवस्था में जीता है।

**वैश्विक मूल्य–** जे. कृष्णमूर्ति जी भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के दार्शनिक, विचारक, समाज मार्गदर्शक तथा शिक्षाशास्त्री माने जाते हैं। वे भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व की भलाई एवं प्रगति की बात करते थे। सम्पूर्ण विश्व एवं समाज की प्रगति एवं भलाई से सम्बंधित मूल्य ही वैश्विक मूल्य होते हैं। इनका सम्बंध देश की सीमा से परे होता है। यह जाति, धर्म, समूह आदि से स्वतंत्र होते हैं। इनमें समानता, स्वतंत्रता, न्याय आदि के मूल्यों का समावेश होता है। उन्होंने कहा है कि "राष्ट्रवाद, राष्ट्रप्रेम की भावना, वर्ग बोध और जाति बोध आदि सभी 'स्व' की प्रक्रियाएं हैं और इसलिए विघटनकारी है। आखिर एक राष्ट्र है क्या? आर्थिक एवं आत्मरक्षा के कारणों से एक साथ रहने वाले व्यक्तियों का एक समूह। भय और परिग्रही आत्मरक्षा से ही 'वह मेरा देश है' ऐसी कल्पना पैदा होती हैं, उसकी सीमाएं और कर निर्धारण के क्षेत्र निश्चित होते हैं, और इस प्रकार मनुष्य की एकता एवं भ्रातृत्व को असंभव बना दिया जाता है।"

**निष्कर्षः–** कृष्णमूर्ति जी के शिक्षा दर्शन के मूल्य मीमांसा का अध्ययन करते हुये शोधार्थी ने पाया की जें कृष्णमूर्ति जी मूल्य को समाज का मार्ग दर्शक मानते है। उनका मानना है कि मूल्य ही व्यक्ति में अच्छे कर्म एवं सद्गुणों का विकास करते है। उन्होंने शैक्षिक मूल्य को मनुष्य के लिये आवश्यक माना है, समाजिक मूल्यों में दया करूणा, प्रेम होता है। वैश्विक मूल्य विश्व राष्ट्र के लिये आवश्यक है जिसमें सभी राष्ट्रों को हित होता है, मनुष्य अपने को सम्पूर्ण विश्व का नागरिक मानता है वह सहयोग, उत्तरदायित्व, संवेदना एवं प्रेम को बल देते है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कृष्णमूर्ति, जे0, (2011), शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
2. कृष्णमूर्ति, जे0, (2007), शिक्षा संवाद, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
3. कृष्णमूर्ति, जे0, (1993), शिक्षा एवं जीवन का महत्त्व, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
4. कृष्णमूर्ति, जे0, (2012), संस्कृति का प्रश्न, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
5. रूहेला, एस0पी0 (2009), विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।

*****